

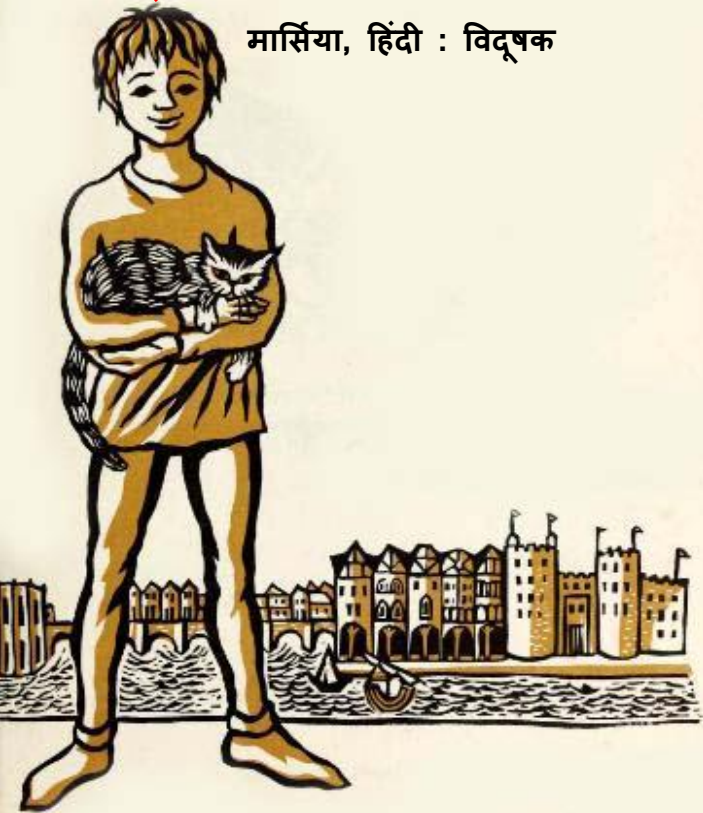
# चूहेखानी बिल्ली

मार्सिया, हिंदी : विदूषक



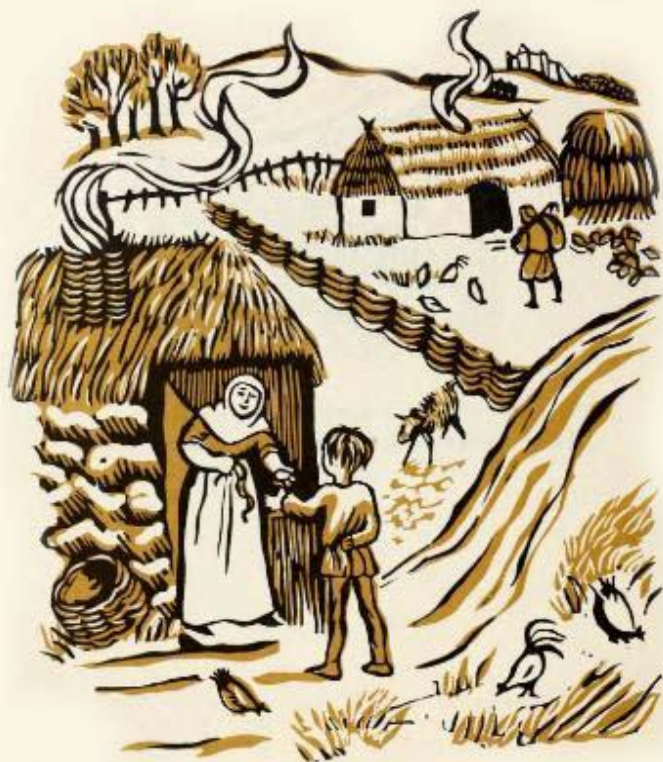
# चूहेखानी बिल्ली

मार्सिया, हिंदी : विदूषक





**“उस बिल्ली को सलाम करो,  
जिसने गरीब डिक का नाम रोशन किया!”**





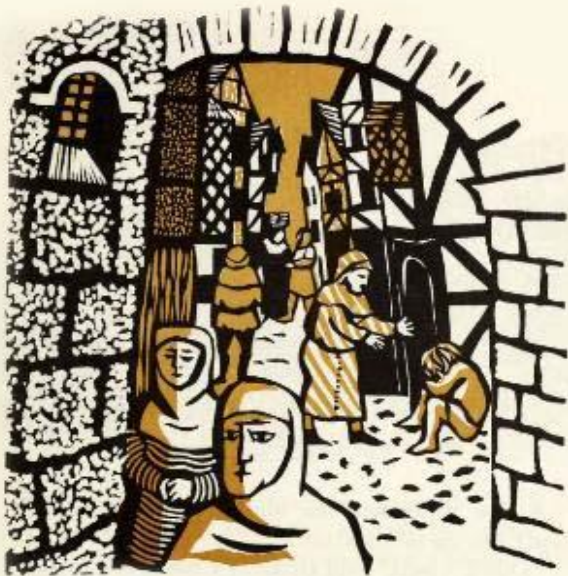
## चूहेखानी बिल्ली

बहुत पहले की बात है, इंग्लैंड में एक छोटा लड़का रहता था। उसका नाम था डिक विटटिंगटन। जब वो बहुत छोटा था तभी उसके माता-पिता के देहांत हो गया था। वो काम करने के लिए बहुत छोटा था। वो बहुत कष्ट में अपना जीवन बिता रहा था। गाँव के लोग खुद गरीब थे और वो उसे खाने के लिए सिर्फ आलू के छिलके ही दे पाते थे। डिक फटे कपड़े पहने इधर-उधर भीख मांगता रहता था। एक दिन एक घोड़ागाड़ी वाला लन्दन जा रहा था। “तुम भी मेरे साथ चलो,” गाड़ी वाले ने कहा। इस तरह वो लन्दन पहुँचा।



डिक ने लन्दन शहर के बारे में बड़ी-बड़ी कहानियां सुनी थीं. ऐसा कहा जाता था कि वहां पर बहुत अमीर और शाही लोग रहते थे. वे दिन भर गाते-बजाते रहते थे. और लन्दन की सड़कों पर सोने की ईंटें बिछी थीं. "जहाँ तक सोने की ईंटों की बात है वो सरासर झूठ है," डिक ने खुद से कहा.





जब डिक लन्दन पहुंचा तो उसे सड़कों पर सोने की बजाए सिर्फ धूल और गर्द ही दिखी! लन्दन एक अजीब जगह थी. वहां न तो उसके कोई दोस्त थे, न खाना था और उसकी जेब बिल्कुल खाली थी. जल्दी ही डिक को लगा कि उसने लन्दन आकर भारी भूल की. काश मैं अपने गाँव में होता और अलाव पर आंच सेंक रहा होता. वो सड़क पर एक कोने में बैठकर रone लगा और वहीं सो गया.



एक नेक आदमी वहां से गुज़रा. उसने कहा, “बेटा, तुम कुछ काम क्यों नहीं करते?”

“मैं काम करने को तैयार हूँ,” डिक ने कहा, “पर मुझे कोई काम मिले तो?”

“चलो तुम मेरे साथ चलो,” उस नेक आदमी ने कहा. फिर वो डिक को एक फार्म पर ले गया. वहां पर डिक ने बहुत मेहनत से काम किया और वहीं रहा. फसल कटने के बाद डिक की फार्म की नौकरी खत्म हुई.

अब डिक फिर से भटकने लगा. वो दुबारा फिर लन्दन आया. भूख के व्याकुल होकर वो बेहोश हो गया. फिर वो एक रईस व्यापारी मिस्टर फिट्ज़वारेन के घर के दरवाज़े के सामने लेट गया.





तभी दरवाज़े पर घर की बावर्चिन आई. उसने डिक को गालियाँ दीं, “हट यहाँ से कामचोर! नहीं तो मैं तेरे ऊपर खौलता पानी लौट दूंगी!”

तब उसी समय मिस्टर फिट्ज़वारेन घर पर खाने के लिए आए. जब उन्होंने चिथड़े पहने उस भूखे-प्यासे लड़के को अपने दरवाज़े पर देखा तो उन्होंने उससे पूछा, “क्या परेशानी है बेटे? तुम्हारी उम्र तो काम करने की है.”

“सर, मैं गाँव का एक गरीब लड़का हूँ,” डिक ने कहा. “मेरे माँ-बाप नहीं हैं और न ही कोई दोस्त है. मैं कोई भी काम करने के लिए तैयार हूँ पर मैंने पिछले तीन दिनों से कुछ खाया नहीं है.” डिक ने उठने की कोशिश की पर कमजोरी के कारण वो दुबारा गिर गया.



“इस लड़के को घर में ले जाओ,” मिस्टर फिट्ज़वारेन ने अपने नौकरों को आर्डर दिया. “उसे कुछ खाने-पीने को दो. जब वो ठीक हो जाए तो फिर वो बावर्चिन की सफाई में मदद करेगा.”

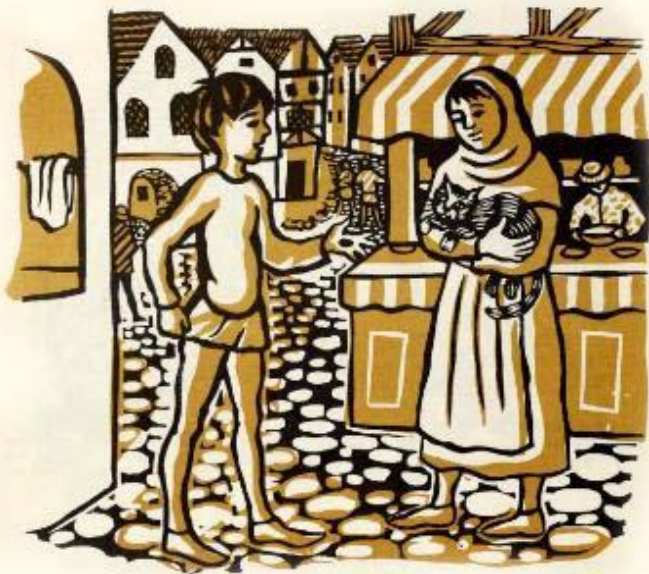
शायद उस घर में डिक बहुत दिनों तक अच्छी तरह रहता. पर उस क्रूर बावर्चिन को उससे नफरत थी.

“इधर साफ़ करो! उधर साफ़ करो, कचरा पेटी खाली करो, फर्श पर पोछा लगाओ ---! एक दम चकाचक साफ़ करो!” फिर बावर्चिन ने झाड़ू, डिक के सिर पर कसकर मारी.



बावर्चिन हमेशा किचन में कुछ भून-तल रही होती. फिर जो भी उसके हाथ में होता वो उसी से डिक को मारती. जब मिस्टर फिट्ज़वारेन की बेटी ने बावर्चिन को यह करते हुए देखा फिर उसने उसे डांटा, “उस लड़के के साथ अच्छा व्यवहार करो, नहीं तो कहीं और जाओ!”

बावर्चिन के खराब व्यवहार के साथ डिक को एक और बड़ी परेशानी थी. उसके कमरे के पास अनाज की कोठरी थी जिसकी वजह से उसके पलंग पर हमेशा मोटे-मोटे चूहे घूमते थे, और उसकी नींद हराम करते थे. वो रात को एक पल भी नहीं सो पाता था.



एक दिन जूते साफ करने के लिए एक भले आदमी ने डिक को एक पेनी (सिक्का) दिया. अगले दिन डिक को सड़क पर एक लड़की दिखी जो बगल में एक बिल्ली पकड़े थी. डिक दौड़कर उसके पास गया. "इस बिल्ली को तुम कितने में बेंचोगी?" उसने पूछा.

"यह बिल्ली चूहे पकड़ने में उस्ताद है," लड़की ने कहा. "यह बिल्ली काफी महंगी बिकेगी."



“पर मेरी जेब में सिर्फ एक पेनी ही है,” डिक ने कहा, “और मुझे एक बिल्ली की सख्त ज़रूरत है.” फिर उस लड़की ने बिल्ली, डिक को दे दी.

डिक ने बिल्ली को कोठरी में छिपा कर रखा, क्योंकि अगर बावर्चिन उसे देख लेती तो वो बिल्ली की भी जमकर पिटाई लगाती. डिक अपने खाने में से कुछ खाना बिल्ली के लिए ज़रूर बचाकर रखता. उसकी बिल्ली - मिस पुस ने, जल्दी ही लगभग सभी चूहों का सफाया कर दिया. जो बचे, वे डर के मारे अपने बिलों में जा छिपे. अब डिक रात को, चैन की नींद सोता.



जल्दी ही मिस्टर फिट्ज़वारेन का एक जहाज़ दूर देश की यात्रा के लिए जाने वाला था. उन्होंने अपने सारे नौकरों को बुलाया और उनसे पूछा कि क्या वे विदेश में कोई चीज़ बेंचने के लिए भेजना चाहेंगे? सभी नौकर कुछ-न-कुछ लाए. सिर्फ डिक कुछ नहीं लाया. उस बिचारे के पास न पैसे थे और न ही बेंचने के लिए कोई सामान था. उसके पास जहाज़ में भेजने के लिए भी कुछ नहीं था.

“में डिक को कुछ पैसे दूँगी,” मिस ऐलिस ने कहा. फिर उसने डिक को बैठक वाले कमरे में बुलाया.





पर व्यापारी ने कहा, “पैसे उधार देने से काम नहीं चलेगा. वो चीज़, डिक की खुद की होनी चाहिए.” “मेरे पास एक बिल्ली के सिवाय और कुछ नहीं है,” डिक ने कहा.

“फिर अपनी बिल्ली को लेकर आओ, बेटा,” व्यापारी ने कहा, “और बिल्ली को जहाज़ पर जाने दो!”

उसके बाद डिक ने अपनी बिल्ली जहाज़ के कप्तान को सौंपी. बिल्ली देते समय बिचारे डिक की आँखों में आंसू छलक आए. “अब फिर से चूहे मेरे सीने पर कूदेंगे और मुझे रात को एक सेकंड भी सोने नहीं देंगे,” डिक ने कहा. डिक की बात सुनकर बाकी लोग हँसे, पर मिस ऐलिस ने डिक को दूसरी बिल्ली खरीदने के लिए एक सिक्का दिया.



जब बिल्ली जहाज़ पर सैर कर रही थी तब बावर्चिन घर में डिक की पिटाई लगा रही थी. बावर्चिन ने बिल्ली को विदेश भेजने पर डिक का इतना मज़ाक बनाया और उसकी इतनी पिटाई की कि बिचारे डिक ने घर छोड़कर भागने की योजना बनाई. फिर एक दिन अपना थोड़ा बहुत सामान लेकर वो घर छोड़कर निकला. वो कुछ दूर चला और उसके बाद एक पत्थर पर आराम करने के लिए बैठा. वो किस दिशा में जाए वो इस बारे में सोच ही रहा था कि चर्च की घंटियाँ जोर-जोर से बजने लगीं. डिंग-डोंग! डिंग-डोंग!

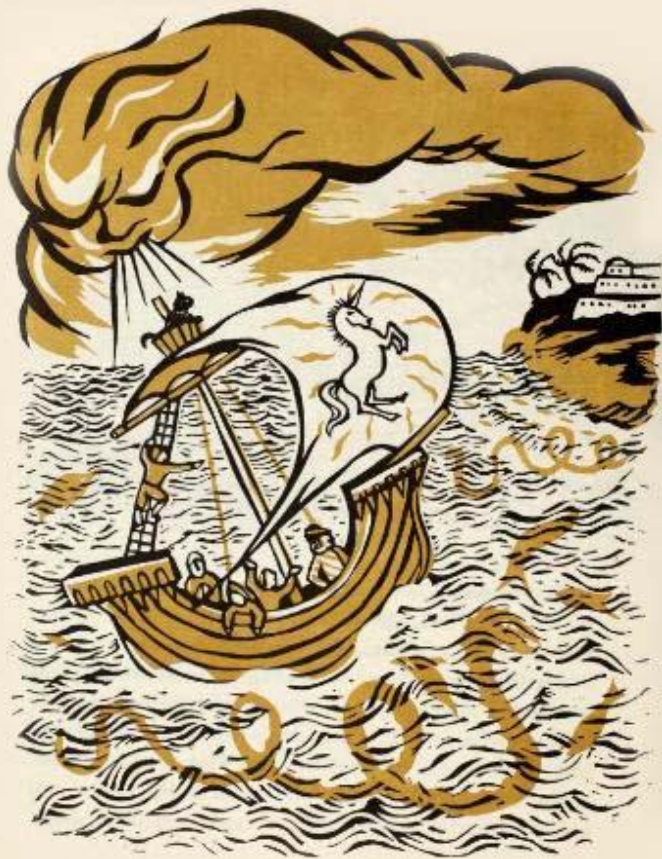


डिक को ऐसा लगा जैसे घंटियाँ उससे कह रही हों :

“दुबारा मुड़ो, डिक, लन्दन के लार्ड मेयर!”

“लन्दन के लार्ड मेयर!” डिक ने खुद से पूछा.

“भला मेरा लन्दन के लार्ड मेयर से क्या लेना-देना! इससे अच्छा है कि मैं व्यापारी के घर वापिस जाकर उस ज़ालिम बावर्चिन की मार खाऊँ!” फिर वो उसी रास्ते घर वापिस चला. भाग्यवश, बावर्चिन के नीचे आने से पहले ही वो घर वापिस पहुँच गया था.





जिस जहाज़ में बिल्ली थी वो बहुत समय तक समुद्र की लहरों पर तैरता रहा. अंत में हवा उसे बहाकर बारबरी देश के तट पर ले आई. वहां पर मूर लोग रहते थे. इंग्लैंड के लोगों को उनके बारे में कुछ भी पता नहीं था. जहाज़ को देखकर बहुत से लोग तट पर आए. वो कप्तान और नाविकों को देखना चाहते थे और व्यापार के लिए लाए गए सामान को भी देखना चाहते थे.

कप्तान ने अपने देश की चीज़ों के सबसे सुन्दर नमूने देश के राजा के लिए भेजे. राजा उनसे इतना खुश हुआ कि उसने कप्तान और उसके आफीसरों को अपने महल में एक भोज के लिए बुलाया. महल समुद्र से कोई एक-मील दूर था.





महल में सोने-चांदी के महंगे कालीन बिछे थे. वहां बड़े दरबार में राजा और रानी एक ऊंचे सिंहासन पर बैठे थे. जल्दी ही भोजन लाया गया. पर जैसे ही नौकरों ने भोजन को कालीनों पर रखा वैसे ही चूहों की एक फौज वहां पहुंची. चूहे सारे पकवान सफाचट कर गए. उन्होंने काफी खाना महंगे कालीनों पर भी बिखरा दिया.

यह सब देखकर कप्तान ने राजा के मंत्रियों से कहा, “चूहों ने बड़ी बर्बादी की?”

“बिल्कुल ठीक,” मंत्रियों के कहा, “इन चूहों ने यहाँ पर बेड़ा गरक कर रखा है. इन चूहों से पिंड छुड़ाने के लिए राजा अपनी आधी तिजोरी देने को तैयार है.”





“यह चूहे न केवल खाने पर धावा बोलते हैं पर वे राजा के पलंग पर भी आक्रमण करते हैं! इसलिए सोते समय राजा के पलंग के चारों ओर पहरेदारों को तैनात करना पड़ता है!”

यह सुनकर कप्तान की खुशी का कोई ठिकाना नहीं रहा. कप्तान को तुरंत डिक की बिल्ली याद आई. उसने राजा से कहा कि उसके पास जहाज़ पर एक ऐसा प्राणी है जो जल्दी से उन चूहों का सफाया कर सकता है. यह सुनकर राजा इतनी जोर से उछला कि पगड़ी उसके सर से फिसल गई. “उस प्राणी को तुरंत मेरे पास लाओ!” राजा चिल्लाया. “मेरे दरबार में चूहों ने दहशत फैला रखी है! अगर तुम्हारी बात सच निकली तो उस प्राणी के बदले में मैं तुम्हारे जहाज़ को हाथी-दांत, सोने और जेवरात से भर दूंगा!”



यह सुनकर कप्तान दौड़ा-दौड़ा जहाज़ पर वापिस गया. इस बीच में राजा ने दुबारा भोजन बनाने के आर्डर दिया. जब कप्तान, बिल्ली के साथ वापिस आया तब उस समय भोजन कालीनों पर रखा जा रहा था. तभी चूहे भोजन खाने के लिए दुबारा दौड़े हुए आए. चूहों को देखते ही बिल्ली कप्तान के कंधे से उछली. केछ ही मिनटों में ज़्यादातर चूहे धाराशाही होकर बिल्ली के पैरों के पास पड़े थे. बचे चूहे डर के मारे दम दबाकर अपने बिलों में जा छिपे.

अपने पुराने दुश्मनों को हरा कर राजा को अपार खुशी महसूस हुई.



उसके बाद रानी साहिबा को बिल्ली देखने की इच्छा हुई. जब कप्तान ने बिल्ली उनके हाथों में दी तो पहले तो रानी साहिबा उस डरावने जीव को छूते हुए कुछ डरीं. बात ठीक भी थी. बिल्ली ने उन भयानक चूहों को तबाह किया था! बाद में रानी ने बिल्ली के माथे को दो-चार बार सहलाया और कहा “पुट्टी, पुट्टी, पुट्टी,” क्योंकि रानी को अंग्रेजी बिल्कुल नहीं आती थी. फिर कप्तान ने बिल्ली को रानी की गोद में रख दिया. वहां पर बिल्ली गुर्राई, रानी के हाथ से खेली और अंत में रानी की गोद में सो गई.



जब राजा को पता चला कि बिल्ली और उसके बच्चे उसके राज्य को चूहों से निजात दिलाएंगे, तब उसने जहाज़ पर लदे पूरे माल को खरीद लिया. उसने सिर्फ बिल्ली के लिए, बाकी सब माल की तुलना में दस गुना ज्यादा कीमत अदा की.



जहाज़ में सब कुछ लादने के बाद कप्तान और उसके अफसरों ने राजा, रानी और वहां के लोगों से अलविदा कहा. लौटे वक्त उन्हें अच्छी हवा मिली जिससे वो बहुत जल्दी ही अपने देश इंग्लैंड में वापिस लौटे.



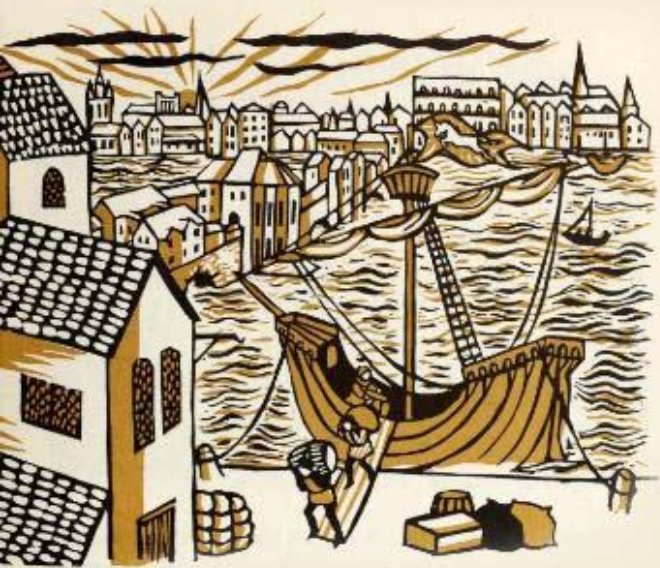
सूरज अभी पूरी तरह उगा भी नहीं था.  
मिस्टर फिल्ट्रिवारेन अपने पलंग से पैसे गिनने को उठे थे.  
तभी दरवाज़े पर खट-खट हुई.

“कौन है?”

“आपका दोस्त कप्तान. आपका जहाज़ यूनिर्कॉर्न अभी-अभी वापिस लौटा है!”

यह सुनकर व्यापारी इतनी तेज़ी से उठा कि वो अपने गठिया के मर्ज़ को बिल्कुल भूल ही गया. उसने तुरंत दरवाज़ा खोला.





बाहर जहाज़ का कप्तान और उसके अफसर खड़े थे. उनके पास हीरे-जवाहरातों का एक बक्सा था और अन्य चीज़ें भी थीं. उन्हें देखकर कप्तान ने उनकी सफल यात्रा के लिए भगवान का शुक्रिया अदा किया. कप्तान ने व्यापारी को बिल्ली की पूरी कहानी सुनाई और उन्हें वो हीरे-मोती दिखाए जो राजा ने डिक के लिए भेजे थे.

उसके बाद व्यापारी तुरंत चिल्लाया :

“डिक को यह खुशखबरी सुनाओ  
आज के बाद उससे  
इज्ज़त से पेश आओ.”



उस समय डिक किचन में बर्तन रगड़ रहा था इसलिए वो साफ़-सुथरी बैठक में नहीं आना चाहता था। “देखिये, फर्श एकदम साफ़ है और मेरे जूते गंदे हैं और उनमें से कीलें बाहर निकल रही हैं।” पर व्यापारी ने डिक को ज़बरदस्ती बैठक में बुलवाया।

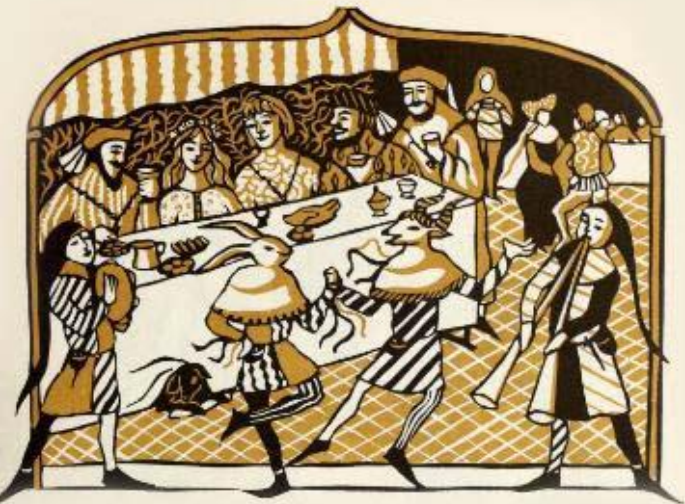
उसने डिक का हाथ पकड़कर उसे बधाई दी, “मिस्टर डिक मैं आपकी अच्छी किस्मत पर आपको हार्दिक बधाई देना चाहता हूँ। कप्तान ने आपकी बिल्ली, बारबरी के राजा को बेंच दी। बिल्ली के बदले राजा ने आपको बेशुमार दौलत भेजी है। अब आप अपनी पूरी ज़िन्दगी उसका मज़ा ले सकते हैं।”



जब डिक को हीरे-मोती का बक्सा दिया गया तो उसने उसे तुरंत अपने मालिक के चरणों में रख दिया. पर मिस्टर फिट्ज़वारेन ने उसे लेने से बिल्कुल इंकार किया. उसके बाद डिक ने कप्तान और उसके लोगों को बिल्ली की अच्छी तरह देखभाल करने के लिए इनाम दिए. उसने व्यापारी के घर के सभी नौकरों को भी इनाम दिए – उनमें उसकी दुश्मन वो दुष्ट बावर्चिन भी शामिल थी.

उसके बाद मिस्टर फिट्ज़वारेन ने दर्जियों से डिक के लिए शाही कपड़े सिलवाए. आलीशान मकान खरीदने तक डिक को उन्होंने अपने ही घर में रहने की इजाज़त दी. उसके बाद डिक का हुलिया पूरी तरह बदल गया. वो अब देखने में एक राजकुमार लगने लगा.





जल्द ही डिक में गज़ब का आत्मविश्वास आ गया. उसके बाद मिस ऐलिस उसकी ओर आकर्षित हुई. जब मिस्टर फिट्ज़वारेन को डिक और ऐलिस की मित्रता का पता चला तो उन दोनों की सहमति के बाद उन्होंने उनकी शादी कर दी.

लन्दन के बड़े-बड़े अमीर, अफसर और लार्ड मेयर उनकी शादी में आए. शाही भोजन के बाद कई सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुए.





डिक और उसकी पत्नी ऐलिस को इंग्लैंड का सबसे खुशहाल दंपत्ति बताया गया. बाद में डिक शेरिफ चुना गया और तीन बार लन्दन का लार्ड मेयर बना. अपने पद के अंतिम चरण में डिक ने किंग हेनरी पंचम और उनकी महारानी को दावत पर आमंत्रित किया.

**समाप्त**